15 दीनबन्धु 'निराला'

P3AR9D

आधुनिक काल के बेहद प्रतिष्ठित कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' पर लिखी गयी यह जीवनी एक संवेदनशील साहित्यकार के सरोकारों और संघर्षों को प्रकट करती है। निराला के व्यक्तित्व और जीवन के अनेक अनछुए पहलुओं का उद्घाटन करना पाठ का उद्देश्य है।

महाकवि रहीम के प्रसिद्ध दोहे की यह एक पंक्ति महाकवि निराला पर सटीक बैठती है–**'जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबन्धु सम होय।'** निराला सचमुच दीनों को ही बराबर लखते थे और इन्हें लखते–लखते वह भी दीनबन्धु के समान हो गए थे। दीनबन्धु के समान न हुए होते, तो समस्त हिन्दी–संसार में आज उनकी जैसी लोकप्रियता दीख पड़ती है, वैसी आजकल किसी साहित्यकार की नहीं दीख पड़ी है। सर्वत्र उनकी अर्चना बड़ी श्रद्धा से हो रही है। बड़े–बड़े धुरन्धर महारथी साहित्य–संसार से चले गए, किसी को निराला के समान सार्वजनिक सम्मान नहीं मिला। अपने जीवन–काल में ही वह साहित्यानुरागियों के लिए आकर्षण–केन्द्र और श्रद्धाभाजन बने रहे। मृत्यु के बाद भी उनका सादर स्मरण विविध प्रकार से किया जा रहा है। यह उनके पुण्याचरण का ही प्रभाव है। पुण्यशील के पास सब विभूतियाँ आप–ही–आप आती हैं। दीनबन्धुता से बढ़कर पुण्यशीलता और है ही क्या? दीनबन्धु भगवान को सन्तुष्ट करने का सर्वोत्तम उपाय दीनों का सच्चा बन्धु होना ही है। निराला भी सच्चे अर्थ में दीनबन्धु थे। अपनी शक्ति के अनुसार वे जीवनपर्यन्त दीन–दुखियों की सेवा–सहायता करते रहे। जहाँ सेवा–सहायता में समर्थ न हो सके, वहाँ हार्दिक सहानुभूति का ही उपयोग करके सन्तोष पाया। पर, हर घड़ी उनके मन में दीनों की सेवा–सुश्रूषा की कामना ही जागती रही।

परमात्मा ने उनकी मनोवृत्ति और प्रवृत्ति समझकर ही उन्हें सबसे पहले श्रीरामकृष्ण–मिशन की सेवा में नियुक्त किया था और उन्होंने भी **'यथानियुक्तऽस्मि तथा करोमि'** को अक्षरशः चरितार्थ किया। परमहंस श्रीरामकृष्णदेव के वेलूर–मठ (कलकत्ता) में प्रतिवर्ष परमहंसजी और स्वामी विवेकानंदजी की जयन्तियों तथा पुण्यस्मृति–तिथियों पर दरिद्रनारायण विधिवत् भोजन कराया जाता था। वहाँ मिशन की शाखा 'विवेकानन्द–सोसायटी' के विद्वान संन्यासियों के साथ 'समन्वय'–सम्पादक निरालाजी भी जाया करते थे। उस विराट आयोजन के कार्यक्रमों में निराला केवल दरिद्रनारायण को भोज्य पदार्थ वितरित करने का ही काम अपने जिम्मे लेते थे। कंगालों को खिलाने में उनकी गहरी लगन देख लोग मुग्ध हो रहते थे। वहाँ अधिकतर बंगीय भद्र–समाज ही जुटता था और निराला मातृभाषा की तरह बंगला–भाषा बोलकर समागत समाज को आप्यायित कर देते थे। वे बंगीय समाज में दूध–मिसरी की तरह घुल–मिल जाते थे। स्वाभाविक रीति से बँगला बोलनेवाला व्यक्ति शीघ्र ही बंगाली–बन्धुओं का आत्मीय बन जाता है। अच्छी अँगरेजी और खाँटी बंगला बोलने के कारण ही वहाँ के समाज में भी वे पूर्णतः समादृत थे। बंगभाषा के साहित्य में उनकी पैठ किसी विलक्षण बंगाली से भी कम न थी। उस समाज के लोग आग्रहपूर्वक उनसे कवीन्द्र रवीन्द्र के गीत गवाकर सुनते और तृप्त होते थे।

भगवद्विभूतियाँ उन्हें ख़ूब मिली थीं। आकर्षक रूप, लम्बे-तगड़े डील-डौल का शरीर, व्यायाम के अभ्यास से सुगठित स्वास्थ्य, विलक्षण मेधाशक्ति, ललित मनहर कण्ठ, दयार्द्र हृदय, चिन्तनशील मस्तिष्क, उद्भावना शक्ति-सम्पन्न बुद्धि—सब कुछ भगवान् ने उन्हें भरपूर दिया था। बड़ी-बड़ी सुहावनी-लुभावनी आँखें, दमकती दाड़िम-दसनावली, घुँघराली अलकावली, लघु मुख-विवर, पतले-पतले अधर, पतली-पतली बाँकी अँगुलियाँ, प्रशस्त वक्षस्थल, हर तरह से सिरजनहार ने उन्हें सँवारा था। जिस मण्डली में बैठ जाते थे उसे अपने व्यक्तित्त्व से जगमगा देते थे। उनकी ज़ुल्फें टकटकी बाँध लेती थीं। कविता-पाठ की भाव-भंगी श्रोताओं के हृयगत भावों को उद्दीप्त कर देती थी! 'मतवाला-मण्डल' (कलकत्ता) में एक बार एक धनी-मानी बंगीय परिवार से उनके विवाह का प्रस्ताव भी आया था। पर, वह तो एक पत्नीव्रत थे। उनके पास तो युवती छात्राएँ भी साहित्यिक उद्देश्य से आती थीं। छात्र भी आते थे। पर वे किसी छात्रा से वार्त्तालाप करते समय आँखें बराबर नहीं करते थे। कामिनी- कंचन का त्याग करके वे गृहस्थाश्रम में ही संन्यासी बने रहे। यदि उन दिनों मोहक पदार्थों के प्रति उनके मन में आसक्ति होती, तो उन्हें हस्तगत करनेवाले गुण उनमें पर्याप्त थे। किन्तु, सांसारिक सुख-भोगों की वासनाएँ उनकी पत्नी के साथ ही विलीन हो गई। कंचन की कामना कभी उनके भीतर झाँकने भी न पाई। द्रव्य के लिए उनका करतल प्रवाह क्षेत्र-मात्र था। द्रव्य-संचय उनका ध्येय कभी रहा ही नहीं। धन उनके पास अतिथि के समान अल्पावधि तक ही टिकने आता था। अगर हजार आया, तो डेढ़ हजार का चिट्ठा पहले से तैयार है। अभाव-ग्रस्तों के अभाव उनके दिमाग के दायरे में मँडराते थे। भरपेट खाने के लिए तरसनेवाले निकौड़िये से लेकर मेहनत-मशक्कत करनेवाले मजदूर तक उनकी निगाहों में बसे हुए थे और जब कभी उनके मन-माफिक अर्थलाभ हो जाता, वह तुरन्त इन मरभूखों की ओर दौड़ जाते। 'जिनके लहहि न मंगल नाहीं ते नर वर थोरे जग माहीं'-उन्हीं थोड़े लोगों में वे भी एक थे।

'मतवाला-मण्डल' में भिखमंगी की समस्या पर और अख़बारों में छपे इस विषय के समाचारों या लेखों पर जब कभी बातचीत होती थी, यदि निराला वहाँ उपस्थित रहते, बड़े आवेश में वे अपने युक्तियुक्त तर्क उपस्थित करते। वे देश में फैली हुई आर्थिक विषमता पर शब्दास्त्र-सन्धान करते समय उग्रतम साम्यवादी प्रतीत होते थे। यद्यपि हृष्ट-पुष्ट भिक्षुकों के प्रति उनकी सहानुभूति भी उन्मुख नहीं थी, तथापि असमर्थ या अपाहिज भिखारियों की दयनीय दशा के लिए वह शासन और समाज की ही तीव्र आलोचना किया करते थे। लँगड़े-लूले, अन्धे, कोढ़ी और निकम्मे दीन-बन्धुओं पर ही उनकी दृष्टि अटकती थी, फिर तो वह अपनी वास्तविक परिस्थिति को बिल्कुल भूल जाते थे। कलकत्ता-सदृश महानगर की सड़कों की दोनों पटरियों पर वह ढूँढ़ते फिरते थे कि वस्तुतः कौन बेचारा कैसी दुर्गति में है। उनका अधिकांश अवकाश-काल दीनों की दुनिया में ही बीतता था। वहाँ फुटपाथों पर भिखारियों के सिवा बहुतेरे निराश्रित ग़रीब और कुली-कबाड़ी भी रात में पड़े रहते हैं। उनके लिए बीड़ी, मूढ़ी, भूजा, चना, मूँगफली आदि खरीदकर वितरण करनेवाला धनकुबेरों की उस महानगरी में निराला के सिवा दूसरा कोई न

देखा गया। बड़े-बड़े सेठ घनघोर रात में भी उन पटरियों पर से गुजरते थे, पर कहीं-कहीं दो-चार पैसे फेंकनेवाले भले ही दीख जायँ, निराला की तरह उन दीनों से आत्मीयता स्थापित करनेवाले ढूँढ़े भी नहीं मिल सकते थे। उस महानगर में नाना प्रकार के मनोरंजन के साधन हैं। क्या उन्हें उपलब्ध करने के लिए निराला को पैसों की कमी थी? किन्तु, उनका मनोरंजन तो दीन-दुखियों को सुख पहुँचाने से ही होता था। कोई मित्र उन्हें सिनेमा-थियेटर भले ही ले जाय, उनके पैसे तो भूखे-रूखे ग़रीबों की सेवा में ही लगने पर अपनी सार्थकता समझते थे।

निराला केवल शहरों या बाज़ारों और स्टेशनों के अन्दर मिलनेवाले दीनजनों पर ही ध्यान नहीं देते थे, अपने गाँव और पड़ोस के ग़रीब गृहस्थों की सहायता का भी ध्यान रखते थे। उनके गाँव और जिले के भी कई आदमी उनकी उदारता या दानशीलता की कहानी सुनकर उनके पास आ धमकते थे। अतिथि भी उनके विचित्र भाँति के होते थे। परिचितों और कुटुम्बियों के अतिरिक्त ऐसे लोग भी कलकत्ता तक दौड़ लगाकर उनका पीछा करते थे, जो उनसे किसी-न-किसी प्रकार का लगाव जोड़कर उनके शील-सौजन्य से लाभ ऐंठ लेते थे। भोजन के सिवा कपड़े-जूते की माँग तो होती ही थी, चलते समय राह खर्च की फ़रमाइश भी होती थी। देखने वाले को भले ही यह नागवार मालूम होता हो, पर निराला की शक्ति भंग नहीं होती थी। उनकी शान्ति तो तभी भंग होती थी, जब किसी ज़रूरतमन्द की मदद नहीं कर सकते थे। किसी आदमी को अपने से अनुचित लाभ उठाते देखकर भी उनके धैर्य को ठेस नहीं लगती थी। दूसरों के अभाव को अपने ऊपर ओढ़ लेने से भी उनका शान्त-गम्भीर हृदय कभी विचलित होता नहीं देखा गया। अगर कोई कहता भी था कि आप इतना खटराग क्यों पालते हैं, ऐसे परमुण्डे फलाहार करनेवालों को टरकाया कीजिए, तो मुस्कराकर ही रह जाते थे। उनको भला सीख कौन दे सकता था? वह तो स्वयं ही नीति और धर्म के मर्मज्ञ व्यक्ति थे।

यह विशेषता निराला में ही देखी गई कि अपनी आवश्यकताओं को भुलाकर दूसरों की आवश्यकताओं को दूर करने के लिए परेशानियाँ और कठिनाइयाँ झेलने में अधीर नहीं होते थे। उन्हें अपने खाने-पीने या कपड़े-लत्ते की कभी चिन्ता ही नहीं हुई। अच्छा कपड़ा-जूता भी कुछ ही दिनों तक उनके पास टिकता था; तोशक-रजाई तक किसी को दे डालने में तनिक हिचक न होती थी। न उनके पास कुंजी रह पाती थी और न कभी कपड़े या रुपये-पैसे रखने के लिए ट्रंक या बक्स ही खरीदा। गद्दे या लिहाफ की परवाह न करके जैसे-तैसे सो रहे और उतने ही में आराम से दिन गुजार लिए। सुन्दर पलंग या शानदार कुर्सी-मेज की कभी कामना ही नहीं की। जिस कमरे में रहना है, उसकी सजावट का कभी सपना भी न देखा। यद्यपि उन्होंने 'मतवाला'-सम्पादक के अविरल स्नेह के प्रसाद-स्वरूप अच्छे-से-अच्छे कपड़े और तेल-फुलेल तथा खान-पान का सुख अच्छी तरह भोग लिया, तथापि अपनी कमाई के पैसे से कभी भोग-विलास की सामग्री नहीं बेसाही। कलकत्ता छोड़ने पर जब वे लखनऊ और प्रयाग में रहे, तब भी मस्त-मौला फ़कीर की तरह ही जीवन-यापन करते रहे। जहाँ कहीं रहे, आसपास के दुकानदारों को मुँहमाँगा दाम देकर निहाल कर दिया। इक्के-ताँगेवाले भी उनकी दरियादिली से

परिचित थे और उन्हें देखते ही दूसरे के साथ तय किया हुआ भाड़ा छोड़कर साग्रह बिठा लेते थे। अड़ोस-पड़ोस के ग़रीब उनसे इतने अधिक उपकृत रहते थे कि उन्हें राह चलते असीसने लगते थे। याचकों के लिए तो कल्पतरु थे ही, अपने मित्रों के लिए **मुक्तहस्त दोस्त-परस्त** थे। मित्रों और अतिथियों के स्वागत-सत्कार का वैसा हौसला अब देखने में नहीं आ रहा। बहुत-से लोगों को निराला-सम्बन्धी ये बातें अतिरंजित जान पड़ेंगी। पर, मैं तो निराला के साथ वर्षों रहकर उनके प्रतिदिन के जीवन-क्रम को ही निकट से देख चुका हूँ और उनके स्नेह-भाजन के रूप में उनका प्रगाढ़ स्नेह भी पाता रहा हूँ। किन्तु, आधुनिक युग में ऐसी बातों को अतिशयोक्ति समझनेवाले सज्जन यह सोचें तो सही कि भूखे को देखते ही अपने आगे परोसी हुई थाली उसके सामने रख देनेवाले कितने महानुभाव आज के समाज को विभूषित करते हैं। निराला खुद मामूली कपड़ों में गुजर करके ग़रीब को अपने नये कपड़े को ओढ़ा देते थे। उस तरह के आचरण के लोग साहित्य-जगत् में तो नहीं देखे गए हैं। जिस व्यक्ति में अन्यान्य लोगों से जो अधिक विशिष्ट गुण हों, उनका स्मरण न करना-कराना ईश्वर की दी हुई वाणी को व्यर्थ करना है।

– आचार्य शिवपूजन सहाय

शब्दार्थ

कल्पतरु	–	इच्छापूर्त्ति करनेवाला काल्पनिक पेड़
सटीक	–	उपयुक्त
दीन	–	ग़रीब
समस्त	–	संपूर्ण
सर्वत्र	–	सभी जगह
अर्चना	–	प्रार्थना
सम्मान	–	प्रतिष्ठा
प्रभाव	–	असर
आप्यायित	–	प्रसन्न
तृप्त	–	संतुष्ट
बेसाहना	–	खरीदना/एकत्रित करना
अधर	–	ओठ
सिरजनहार	–	ईश्वर
वार्त्तालाप	–	बातचीत
विलीन	–	समाप्त
संचय	–	संग्रह
ध्येय	–	उद्देश्य

लखै	–	देखना
दाड़िम	–	अनार
युक्तियुक्त	–	सटीक
परिस्थिति	–	हालात
नागवार	–	नापसंद
निहाल करना	–	खुश कर देना
मामूली	–	साधारण
व्यर्थ	–	बेकार
साहित्यानुरागी	–	साहित्य प्रेमी
कामिनी-कंचन	–	विषय वासना
मुक्तहस्त	–	खुले हाथ से
अविरल	–	लगातार

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. निराला को 'दीनबंधु' क्यों कहा गया है?
2. निराला संबंधी बातें लोगों को अतिरंजित क्यों जान पड़ती हैं ?
3. निम्न पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

   (क) "जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबन्धु सम होय।"

   (ख) "पुण्यशील के पास सब विभूतियाँ आप-ही-आप आती हैं।"

   (ग) "धन उनके पास अतिथि के समान अल्पावधि तक ही टिकने आता था।"

व्याकरण

श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द : उच्चारण, मात्रा या वर्ण के साधारण बदलाव के बावजूद सुनने में समान परन्तु भिन्न अर्थ देनेवाले शब्द को श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द कहते हैं।

जैसे :

दिन	–	दिवस
दीन	–	ग़रीब

निम्नलिखित श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द का अर्थ लिखिए :

1.	समान सम्मान	2.	केवल कैवल्य
3.	बन वन	4.	भगवान भाग्यवान

5.	छात्र छत्र	6.	अन्य अन्न
7.	द्रव्य द्रव	8.	जगत् जगत
9.	अवधी अवधि	9.	क्रम कर्म
10.	आदि आदी	12.	चिंता चिता

अनेकार्थक शब्द : कुछ ऐसे शब्द प्रयोग में आते हैं, जिनके अनेक अर्थ होते हैं। प्रसंगानुसार इनके अर्थ भिन्न-भिन्न होते हैं। जैसे :–

नाना – मेरे **नाना** जी **नाना** प्रकार के खिलौने लाए हैं। (नाना–माँ के पिता, विभिन्न)

आम – **आम** इन दिनों इतने महंगे हैं कि **आम** आदमी के लिए खरीदना मुश्किल है। (आम–एक प्रकार का फल, साधारण)

पानी – उचित समय पर नगर निगम ने **पानी** उपलब्ध कराकर नगरवासियों की **पानी** बचा ली। (पानी–जल, इज्जत)

फल – **फल** का नियमित सेवन करने से शरीर पर सकारात्मक **फल** पड़ता है। (फल–पेड़ का एक अंग, परिणाम)

दी गई जानकारी के आधार पर निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि एक से अधिक अर्थ स्पष्ट हो जाएँ :

1.	मन	2.	हर
3.	कर	4.	अर्थ
5.	मंगल	6.	पास
7.	काल	8.	पर

इन्हें भी जानिए

प्रस्तुत पाठ में लेखक ने निराला के लिए 'दीनबंधु' विशेषण का प्रयोग किया है। कुछ अन्य प्रतिष्ठित विभूतियों से संबंधित विशेषण इस प्रकार हैं :

	विशेषण	प्रतिष्ठित विभूतियाँ
(क)	कथा-सम्राट	मुंशी प्रेमचन्द
(ख)	मैथिल कोकिल	विद्यापति
(ग)	भारत कोकिला	सरोजनी नायडू
(घ)	देशरत्न	डा० राजेन्द्र प्रसाद
(ङ)	लोकनायक	जयप्रकाश नारायण